राज्यों के विविध प्रतिमान
(DIFFERENT MODELS OF STATES)

प्राचीन काल से राज्य का अस्तित्व बना हुआ है, किन्तु उसके नमूने बदलते रहे हैं। प्राचीन युग में उसका बहुत छोटा रूप था जिसे नगर-राज्य (Polis) कहा जाता था, मध्य युग में उसका बहुत बड़ा रूप हो गया जो साम्राज्य जैसा बन गया जिसे रिपब्लिक (Republic) कहा गया, आधुनिक युग में वह अत्यन्त शक्तिशाली व दमनकारी संगठन बन गया जिसे राष्ट्र-राज्य (Nation-State) का नाम दिया गया। ऐसा विवरण एक प्रकार का ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यदि भिन्न दृष्टिकोण से देखा जाए तो राज्य को उसके पुराने व आधुनिक रूपों में वर्गीकृत किया जा सकता है। पुराने नमूने में, राज्य तथा शासन (सरकार) की संस्थाओं के बीच तीक्ष्ण सांस्थानिक अन्तर का यहाँ तक अभाव देखा जा सकता है कि राज्य का अध्यक्ष शासन से अपना सामंजस्य करता है। लोक सेवाओं में खुलेपन व गुणवत्ता पर आधारित प्रवेश का सापेक्षित अभाव है; लोक अधिकारियों को सेवाकाल की सुरक्षा नहीं है तथा बहुत-से सामाजिक संगठनों की स्वायत्तता नहीं है। इससे भिन्न, "आधुनिक राज्य राजनीतिक संरचनाओं का समूह है, जिसमें शासकों व शासितों के बीच स्पष्ट अन्तर देखा जा सकता है, जिसका किसी सुनिश्चित क्षेत्र पर सर्वोच्च अधिकार है, जिसका अपनी दमनकारी शक्ति के अधिकार पर दावा है, तथा जिसे अपने नागरिकों के न्यूनतम स्तर पर समर्थन या उनकी सत्यनिष्ठा के फलस्वरूप वैधता प्राप्त है।"[1]

एक सुगठित परिभाषा के भीतर संस्थाओं के जटिल समूह के वे सभी अनिवार्य तत्व ढूँढे जा सकते हैं जो आधुनिक राज्य की रचना करते हैं—(क) सार्वजनिक संस्थाएँ, निजी या स्वामित्व वाली संस्थाएँ नहीं, (ख) प्रभुसत्ता व वर्चस्व, (ग) हिंसा का औपचारिक एकाधिकार, तथा (घ) तटस्थ नौकरशाही। आधुनिक राज्य की यह अमूल मान्यता है कि इन लोक पदों (तथा उनसे सम्बद्ध शक्तियाँ) का उनके धारकों के निजी लाभ की खातिर उपयोग न किया जाये जिसे आम तौर से भ्रष्टाचार कहा जाता है। आधुनिक राज्य की आमूल रूप से परिभाषित भूमिका तथा उसका कार्य औद्योगिक तथा उसके उत्तर-औद्योगिक युग में सामाजिक व आर्थिक रूपान्तरण को विकसित, संगठित, सुरक्षित व पोषित करता है।[2]

लैफ्टबिच के मतानुसार, आधुनिक राज्य के मुख्य लक्षणों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है[3]—

1. आधुनिक राज्य के पास आधारभूत संस्थाएँ हैं जो सिद्धान्ततः शासकों व शासितों के बीच विभिन्न व स्पष्ट होती हैं।

2. शासन की केन्द्रीकृत व संस्थाओं के फलस्वरूप आधुनिक राज्य का उदय, विकास व सुदृढ़ हुआ जिनका प्रमुख कार्य कृषक समाज से औद्योगिक समाज की ओर राष्ट्रीय संक्रमणों को संभालना, सुरक्षित करना, विकसित करना तथा आर्थिक विकास का संपोषण करना था।

3. ऐतिहासिक दृष्टि से आधुनिक राज्य अपनी लोक संस्थाओं, अपनी प्रभुसत्ता व अपने वर्चस्व, वैद्य दमन (हिंसा) पर औपचारिक एकाधिकार और सैद्धान्तिक रूप में अपनी महत्वपूर्ण नौकरशाही से अपने आदर्श या विशिष्ट रूप में विशेषतायुक्त किया जाता है।

4. यद्यपि विभिन्न राज्य विभिन्न रणनीतियाँ अपनाते हैं, सफल आर्थिक विकास व सफल राज्य अपवादहीन स्थिति में अन्तःसम्बद्ध होते हैं।

5. अपनी आर्थिक प्रगति व अपना विकास करने में, आधुनिक राज्यों को सुरक्षा तथा कानूनी व्यवस्था बनाए रखनी पड़ती है, नागरिक अधिकारों के वृहत समुच्चय से सम्बद्ध माँगों—नीति-निर्णय में विशेषकर वृहत्तर लोकतान्त्रिक भागीदारी तथा कराधान व कल्याणकारी व्यवस्थाओं के प्रति अनुक्रिया करनी पड़ती है।

6. आर्थिक प्रगति की खोज के हेतु अपनायी गई वृहत्त रणनीति लोकशक्तियों व गठबन्धनों की प्रकृति पर महत्वपूर्ण तौर से आश्रित रही है जिस पर राज्य की शक्ति टिकी है और जिसने अपनी तरह से विकास के लक्ष्यों की प्राप्ति को प्रभावित किया है।

---

1 Andrew Leftwich : "Theories of State" in Peter Burnell and Viky Randall (eds) : *Politics in the Developing World*., p. 140.
2 *Ibid*., pp. 142-43.
3 *Ibid*., p. 144.

आधुनिक राज्य का नमूना, जो सोलहवीं व सत्रहवीं शताब्दियों में विकसित हुआ, यह दर्शाता है कि अब प्रभुता-सम्पन्न, धर्मनिरपेक्ष व राष्ट्रीय संगठन हो गया, किन्तु अब भूमण्डलीकरण व उदारीकरण के दौर में नमूना दर्शाता है कि वह लोकतान्त्रिक, आर्थिक तथा विकासात्मक संगठन हो गया है।

विश्व के विकासशील देशों का मामला भिन्न है जहाँ अभी तक राज्य आधुनिक-पूर्व विशेषताओं युक्त है। इन्हें लैप्टविच ने निम्न प्रकार प्रस्तुत किया है[1]—

1. यूरोप के अनेक आधुनिक राज्यों से भिन्न, समकालीन जगत के बहुत से विकासशील देश ऐसे हैं जनकी सीमाएँ तथा प्रमुख संस्थाओं को बाहरी शक्तियों ने आरोपित किया है।

2. कुछ अपवादों के साथ, औपनिवेशिक शासन का मौलिक प्रयोजन और इसलिए औपनिवेशिक संस्थाएँ विकासात्मक न होकर लाभार्जन करने वाली थी।

3. औपनिवेशिक राज्य के शासन की संस्थाओं ने ऐसे प्रयोजनों को परिलक्षित किया जो सामान्यत: धिकारवादी प्रतिमानों की विशेषताओं से युक्त थीं और जिन्हें श्रम के नियन्त्रण तथा अपनी ओर आकृष्ट करने हेतु रचा गया था।

4. बहुत से औपनिवेशिक राज्यों में सबल निरंकुश (दमनकारी) सत्ता और निर्बल अवसंरचना तथा परिवर्तनकारी क्षमताओं के बीच विरोधाभास का लक्षण देखा जा सकता था।

5. विकासशील जगत के बहुत-से देशों ने ऐसी परिस्थितियों में स्वतन्त्रता प्राप्त की जहाँ समाज की शक्तिशाली आर्थिक व़ राजनीतिक शक्तियों ने काफी हद तक क्षेत्रीय व स्थानीय प्रभाव डाला और इसीलिए उन्होंने नाटकीय ढंग से केन्द्रीकृत, स्वायत्तशास्त्री व प्रभावी आधुनिक राज्यों के उदय को रोके रखा।

6. औपनिवेशिक शासन नीचे से ऊपर तक आमतौर से विस्तृत तथा संस्थानीकृत स्वामी-सेवक सम्बन्धों र बना था।

7. उत्तर-औपनिवेशिक दौर में, सरपरस्ती की ये संस्थाएँ आधुनिक राज्य की औपचारिक संस्थाओं के साथ उदित हुई जिन्होंने आम तरीके से उसका रूपान्तरण किया, इसीलिए यह आधुनिक राज्य के केन्द्रीय कार्यों जैसे आर्थिक विकास को बढ़ाने व उसका रख-रखाव करने में अक्षम रहा है।

8. आधुनिक राज्य की संस्थाओं के भीतर आधुनिक-पूर्व तथा पितृवादी शासन व्यवस्थाओं की बहुत-सी विशेषताएँ भर गईं जिससे उन्हें नव-पितृवादी राज्यों का नाम दिया गया।